स्मृतियों की अनुगूँज

जहाँ स्मृतियाँ आज भी साँस लेती हैं

एक जीवन • अनेक पड़ाव • अनगिनत स्मृतियाँ

संजय कुमार राय

B.E. Civil, MBA, PGCBM, LLB

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

प्रकाशन विवरण

शीर्षक — स्मृतियों की अनुगूँज

लेखक — संजय कुमार राय

योग्यता — B.E. Civil, MBA, PGCBM, LLB

संस्करण — हिंदी

© संजय कुमार राय। सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह संस्करण लेखक द्वारा उपलब्ध कराई गई पारिवारिक और व्यक्तिगत स्मृतियों पर आधारित है। जन्म से पूर्व तथा आरंभिक बाल्यकाल के प्रसंग पारिवारिक विवरणों के आधार पर पढ़े जाएँ।

प्रस्तावना : एक दिन पीछे मुड़कर देखा

कुछ यात्राएँ आगे बढ़ने से नहीं, पीछे मुड़कर देखने से समझ में आती हैं

कभी-कभी जीवन के बहुत वर्ष बाद कोई पुराना चेहरा अचानक याद आता है। और उसके साथ एक प्रश्न भी— “जिस व्यक्ति ने कभी मेरे जीवन में इतनी जगह घेर रखी थी, वह आज मेरी रोज़मर्रा की दुनिया में कहाँ है?”

फिर एक और चेहरा याद आता है। एक पुराना घर। विद्यालय की कोई सीढ़ी। स्टेशन का कोई प्लेटफ़ॉर्म। किसी मित्र की हँसी। किसी अपने की डाँट। किसी का बिना कुछ कहे कंधे पर रखा हाथ। और अचानक समझ में आता है— हम जीवन में केवल आगे नहीं बढ़ते। आगे बढ़ते-बढ़ते बहुत कुछ पीछे भी छोड़ते जाते हैं।

शायद उम्र का एक पड़ाव ऐसा होता है जब मन पहली बार पूछता है— जो पीछे छूट गया, क्या वह वास्तव में छूट गया? मेरी यह पुस्तक शायद इसी प्रश्न से जन्मी है।

जब जीवन जीने में ही समय निकल गया

जीवन को जीते समय उसे समझने की फ़ुर्सत कहाँ होती है? बचपन में अगली छुट्टी का इंतज़ार था। विद्यालय में अगली कक्षा का। युवावस्था में भविष्य का। फिर अपने पैरों पर खड़े होने की चिंता।

काम मिला तो ज़िम्मेदारियाँ आ गईं। परिवार बढ़ा। शहर बदले। लोग मिले। संबंध बने।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

कुछ सपने पूरे हुए। कुछ ने रास्ते में अपना रूप बदल लिया। और हम चलते रहे।

उस समय शायद ही कभी सोचा कि जिन दिनों को हम साधारण समझकर पार कर रहे हैं, उन्हीं में से कुछ दिन वर्ष बाद हमारे जीवन के सबसे अनमोल पन्ने बन जाएँगे।

हम हमेशा किसी अगले पड़ाव की ओर देखते रहे। लेकिन जीवन चुपचाप हमारे पीछे भी एक संसार बनाता रहा।

एक दिन रास्ता लंबा दिखाई दिया

फिर एक दिन मैंने पीछे देखा। कोई विशेष अवसर नहीं था। न कोई उत्सव। न कोई उपलब्धि। बस लगा— रास्ता काफ़ी लंबा हो चुका है। पीछे देखने पर एक विचित्र बात हुई। मुझे सबसे पहले अपनी उपलब्धियाँ याद नहीं आईं। चेहरे याद आए।

कुछ आवाज़ें। कुछ स्थान। कुछ बहुत साधारण क्षण। मैंने जीवन में अनेक महत्त्वपूर्ण काग़ज़ देखे होंगे। कई परिणाम। कई नियुक्तियाँ। कई औपचारिक पत्र। कई निर्णय। उनमें से बहुत-सी बातें अब पूरी तरह याद भी नहीं। लेकिन आज भी याद है—

किसी का कंधे पर रखा हाथ। किसी मित्र की खुलकर हँसने की आवाज़। घर से निकलते समय दरवाज़े तक छोड़ने आया कोई अपना। किसी स्टेशन पर प्रतीक्षा के वे कुछ मिनट। किसी पत्र के आने की बेचैनी। गलती पर मिली डाँट।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

और वह क्षण जब किसी ने मुझ पर विश्वास किया था— जब मेरा अपना विश्वास थोड़ा कम पड़ रहा था। आख़िर जीवन में बचता क्या है? तभी एक प्रश्न भीतर कहीं ठहर गया—

मनुष्य का जीवन आख़िर बनता किससे है? उन उपलब्धियों से जिन्हें हम अपने परिचय में लिखते हैं? पदों से? प्रमाणपत्रों से? संपत्ति से? या उन छोटे-छोटे क्षणों से जिनका कहीं कोई आधिकारिक रिकॉर्ड नहीं होता?

मेरे पास तब इसका उत्तर नहीं था। आज भी शायद पूरा उत्तर नहीं है। लेकिन पीछे देखते हुए इतना अवश्य महसूस हुआ— जिन बातों को कभी बहुत बड़ा समझा था, उनमें से कई आज छोटी लगती हैं। और जिन्हें कभी साधारण समझकर आगे निकल गया था— उनमें से कुछ आज बहुत बड़ी दिखाई देती हैं। शायद समय घटनाओं को नहीं बदलता, वह उनके अर्थ बदल देता है।

उम्र के साथ प्रश्न भी बदल जाते हैं

एक समय था जब मन में प्रश्न होते थे— मैं क्या बनूँगा? कहाँ पहुँचूँगा? कितना हासिल करूँगा? क्या मेरे सपने पूरे होंगे?

फिर वर्ष बाद उन्हीं प्रश्नों का स्वर बदलने लगा। अब कभी मन पूछता है— मेरे साथ कौन-कौन चला? किसने कठिन समय में मेरा हाथ पकड़ा? मैं किसके लिए समय पर उपस्थित हो पाया? किसी के जीवन में मेरे होने से क्या फ़र्क पड़ा? और सबसे कठिन प्रश्न— जिन लोगों ने मुझे वह बनाया जो आज मैं हूँ, क्या मैंने कभी उन्हें ठीक से बताया कि मेरे जीवन में उनका क्या स्थान है?

शायद इन्हीं प्रश्नों के बीच इस पुस्तक के लिए जगह बनी।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

यह किसी महान व्यक्ति की कहानी नहीं

मैं अपने जीवन को असाधारण सिद्ध करने के लिए नहीं लिख रहा। मेरे जीवन में भी वही बहुत कुछ आया जो लाखों मनुष्यों के जीवन में आता है— घर। विद्यालय। मित्र। सपने। युवावस्था। प्रेम। बिछोह। काम। परिवार। ज़िम्मेदारियाँ। सफलताएँ। असफलताएँ।

कुछ सही निर्णय। कुछ गलत। कुछ ऐसी बातें जिन पर आज भी गर्व होता है। और कुछ ऐसे क्षण जिनके सामने आज खड़ा होकर लगता है— काश, उस समय थोड़ी और समझ होती।

शायद इसी साधारणता में इस पुस्तक का अर्थ छिपा है। क्योंकि मनुष्य की कहानी महत्त्वपूर्ण होने के लिए असाधारण होना आवश्यक नहीं। कई बार एक साधारण जीवन में ही असंख्य असाधारण भावनाएँ छिपी होती हैं।

इन पन्नों पर केवल उजाला नहीं होगा

मैं बीते हुए समय को सुंदर बनाकर प्रस्तुत नहीं करना चाहता। जहाँ हँसी थी, वहाँ हँसी होगी। जहाँ प्रेम था, वहाँ प्रेम। जहाँ सफलता मिली, उसका आनंद भी रहेगा।

लेकिन जहाँ गलती हुई— वहाँ गलती को भी अपना नाम मिलेगा। जहाँ डर था— वहाँ उसे साहस का नाम देकर नहीं छिपाया जाएगा। जहाँ कोई संबंध अधूरा रह गया— उसे जबरन सुखद अंत देने की कोशिश नहीं होगी।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

और जहाँ मैं गलत था— वहाँ वर्ष बाद अपने बचाव में कोई नया तर्क खड़ा करना उचित नहीं होगा। क्योंकि पीछे मुड़कर देखने का अर्थ केवल पुराने दिनों को याद करना नहीं है। कभी-कभी इसका अर्थ है— अपने पुराने रूप के सामने कुछ देर बिना सफ़ाई दिए खड़े रहना।

कुछ प्रश्न स्वयं से भी पूछने होंगे

क्या मैंने अपने लोगों को पर्याप्त समय दिया? क्या किसी सफलता की कीमत आवश्यकता से अधिक चुकाई? क्या कोई संबंध केवल इसलिए दूर हो गया क्योंकि दोनों में से किसी ने पहला कदम नहीं उठाया? क्या किसी से क्षमा माँगनी चाहिए थी?

क्या किसी को धन्यवाद कहना बाकी रह गया? क्या किसी व्यक्ति की महत्ता मुझे उसके दूर जाने के बाद समझ आई? और— क्या जीवन की दौड़ में कभी ऐसा भी हुआ कि मंज़िल मिल गई, लेकिन रास्ते का कोई बहुत अपना व्यक्ति पीछे रह गया?

इन सभी प्रश्नों के उत्तर मेरे पास नहीं हैं। संभव है इस पुस्तक के अंत तक भी न हों। अब मुझे लगता है— हर प्रश्न उत्तर पाने के लिए नहीं आता। कुछ प्रश्न केवल इसलिए आते हैं कि मनुष्य स्वयं को थोड़ा बेहतर देख सके।

जिन लोगों ने मुझे बनाया

इस यात्रा में अनेक चेहरे आएँगे। माता-पिता। परिवार। शिक्षक। मित्र। सहपाठी। सहकर्मी। वरिष्ठ। कनिष्ठ। और कुछ ऐसे लोग भी, जिनके साथ जीवन का बहुत छोटा हिस्सा बीता, लेकिन जिन्होंने भीतर कोई स्थायी निशान छोड़ दिया।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

मैं उनके बारे में केवल यह दर्ज नहीं करना चाहता कि वे कब मिले। मैं यह समझना चाहता हूँ — उनके मिलने से मेरे भीतर क्या बदला? किसी ने अनुशासन दिया। किसी ने साहस। किसी ने प्रेम का अर्थ समझाया। किसी ने प्रतीक्षा करना सिखाया। किसी ने हार के बाद उठना। किसी ने क्षमा करना।

और शायद किसी ने कुछ सिखाया भी नहीं— वह कठिन समय में बस पास खड़ा रहा। कभी-कभी इतना ही किसी जीवन को बदलने के लिए पर्याप्त होता है।

हम अकेले अपना निर्माण नहीं करते

आज पीछे देखकर मुझे एक बात पहले से अधिक स्पष्ट दिखाई देती है— हम स्वयं को अकेले नहीं बनाते। हम अपने निर्णयों से बनते हैं। लेकिन केवल उनसे नहीं।

हम उन घरों से बनते हैं जिनमें बड़े हुए। उन आवाज़ों से जो बचपन से सुनते आए। उन शिक्षकों से जिन्होंने कभी डाँटा। उन मित्रों से जिन्होंने हमारी मूर्खताओं पर हमारे साथ हँसा। उन लोगों से जिन्होंने हम पर विश्वास किया।

उन असफलताओं से जिन्हें हमने चुना नहीं। उन बिछोहों से जिन्हें रोक नहीं पाए। और उन छोटी खुशियों से— जिनकी कीमत हमें अक्सर उनके बीत जाने के बाद समझ आई। हमारे भीतर थोड़ा-थोड़ा बहुत से लोग रहते हैं।

शायद मनुष्य का व्यक्तित्व वास्तव में एक व्यक्ति की रचना नहीं— अनेक संबंधों की साझी कृति है।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

बीते हुए स्वयं को कटघरे में नहीं खड़ा करूँगा

इस पुस्तक को लिखते समय एक सावधानी मुझे लगातार रखनी होगी। मैं अपने अतीत को आज की बुद्धि से नहीं आँकना चाहता। आज जो बात बहुत स्पष्ट दिखाई देती है, आवश्यक नहीं कि तीस या चालीस वर्ष पहले भी उतनी ही स्पष्ट रही हो। तब उम्र अलग थी।

परिस्थितियाँ अलग थीं। संसाधन अलग थे। समाज अलग था। जानकारी अलग थी। डर अलग थे। और सपनों की भाषा भी अलग थी।

इसलिए मैं अपने पुराने रूप को आज की अदालत में खड़ा नहीं करना चाहता। मैं उससे केवल मिलना चाहता हूँ। पूछना चाहता हूँ— तुम उस समय क्या चाहते थे? किससे डरते थे? किस बात पर हँसते थे? किसका इंतज़ार करते थे? किसे खोने का डर था? किसे खो दिया? और भविष्य से तुम्हारी सबसे बड़ी उम्मीद क्या थी?

शायद इन प्रश्नों के बीच मुझे वह व्यक्ति फिर दिखाई दे— जो कभी मैं ही था।

यह आत्मप्रशंसा नहीं, आत्मसंवाद है

यह पुस्तक मेरी उपलब्धियों की सूची नहीं होगी। यह स्वयं से एक लंबी बातचीत होगी। कहीं मुस्कराते हुए। कहीं असहज होते हुए। कहीं किसी पुराने स्पर्श को याद करते हुए। कहीं किसी निर्णय पर फिर विचार करते हुए। और कहीं शायद पन्ना लिखने के बाद कुछ देर चुप बैठे हुए। क्योंकि कुछ बातें लिखने के लिए शब्द चाहिए। और कुछ बातें समझने के लिए— मौन।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

अभी यात्रा समाप्त नहीं हुई

मैं यह पुस्तक किसी ऐसी मंज़िल पर खड़े होकर नहीं लिख रहा जहाँ से जीवन पूरा दिखाई देता हो। यात्रा अभी चल रही है। इसलिए यह किसी पूर्ण व्यक्ति की कहानी नहीं। यह बनने की कहानी है।

उस बच्चे से— जिसके लिए संसार कभी घर और विद्यालय के बीच सिमटा हुआ था। उस युवक तक— जिसे लगता था कि पूरा भविष्य उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। और वहाँ से उस मनुष्य तक— जिसे धीरे-धीरे समझ आया कि जीवन की सबसे कठिन परीक्षाएँ हमेशा प्रश्नपत्र लेकर नहीं आतीं।

कुछ परीक्षाओं में अंक नहीं मिलते। केवल मनुष्य बदल जाता है।

शायद इसीलिए लिखना आवश्यक था

मैं नहीं जानता कि इस यात्रा के अंत में अपने जीवन के बारे में क्या निष्कर्ष निकालूँगा। संभव है कोई निष्कर्ष मिले ही नहीं। लेकिन अब इतना अवश्य लगता है— कुछ दरवाज़े खोलने चाहिए। कुछ पुराने रास्तों पर फिर चलना चाहिए।

कुछ लोगों से दोबारा मिलना चाहिए— भले ही केवल शब्दों में। कुछ धन्यवाद कहे जाने चाहिए। कुछ गलतियाँ स्वीकार की जानी चाहिए। और कुछ साधारण क्षणों को वह स्थान मिलना चाहिए— जो उन्हें जीते समय नहीं दे पाया। शायद लिखने का अर्थ भी यही है। बीते हुए समय को वापस लाना नहीं— उसके अर्थ को पहली बार ठीक से समझना।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

पाठक से एक आत्मीय निवेदन

अब इस पुस्तक का पहला वास्तविक अध्याय शुरू होने वाला है। लेकिन उससे पहले मैं आपसे एक छोटी-सी बात कहना चाहता हूँ। आगे पढ़ते समय केवल मेरी कहानी मत पढ़िएगा। कभी-कभी किसी पंक्ति के बीच अपने जीवन को भी आने दीजिएगा।

यदि कोई पुराना चेहरा याद आए— उसे आने दीजिए। यदि किसी मित्र की याद आए जिससे वर्षों से बात नहीं हुई— उसका नाम मन में दोहराइए। यदि माता-पिता की कोई छोटी-सी बात अचानक याद आ जाए— उस स्मृति से जल्दी बाहर मत निकल जाइए।

और यदि किसी ऐसे व्यक्ति का चेहरा सामने आए जिसे बहुत समय से कुछ कहना बाकी है — तो केवल इस पुस्तक का अगला पन्ना पलटने की जल्दी मत कीजिए। संभव हो तो उससे बात कीजिए। क्योंकि पुस्तकें बाद में भी पढ़ी जा सकती हैं। कुछ रिश्तों के पास हमेशा उतना समय नहीं होता।

अंतिम प्रश्न पहला अध्याय शुरू करने से पहले स्वयं से केवल एक प्रश्न पूछिए— यदि आज रात आपको अपने जीवन के बीते वर्षों में से केवल पाँच क्षण चुनकर हमेशा के लिए अपने पास रखने हों— तो वे पाँच क्षण कौन-से होंगे?

उनमें शायद कोई बड़ी उपलब्धि हो।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

समर्पण

यह पुस्तक उन पूज्य माता-पिता को समर्पित है, जिनके त्याग, तपस्या, संस्कार और निःस्वार्थ प्रेम ने जीवन की हर राह को दिशा दी। जिन्होंने स्वयं कठिनाइयाँ सहकर भी अपने बच्चों के सपनों को कभी छोटा नहीं होने दिया। जिनकी सीख ने संघर्ष में धैर्य, सफलता में विनम्रता और हर परिस्थिति में मानवता का मार्ग दिखाया। उनके मौन आशीर्वाद और अथक प्रयास ही वह आधार बने, जिन पर जीवन की पूरी यात्रा खड़ी हो सकी।

यह समर्पण उन नन्हीं मुस्कानों के नाम भी है, जिन्होंने जीवन को नए अर्थ दिए। जिनकी मासूम हँसी ने थके हुए दिनों में ऊर्जा दी, जिनकी छोटी-छोटी बातों ने हर चिंता को हल्का किया, और जिनकी आँखों में भविष्य के अनगिनत सपने देखकर हर दिन कुछ बेहतर करने की प्रेरणा मिलती रही। उनके कारण जीवन केवल ज़िम्मेदारियों का सफ़र नहीं रहा, बल्कि आशा, उत्साह और नए दृष्टिकोण से भरी एक सुंदर अनुभूति बन गया।

और यह समर्पण उस जीवनसंगिनी के लिए भी है, जिन्होंने हर परिस्थिति में एक शांत शक्ति बनकर साथ निभाया। जब जीवन की राह कठिन हुईं, तब धैर्य बनकर खड़ी रहीं; जब मन थका और विचलित हुआ, तब विश्वास और साहस का संबल बनीं। बिना किसी अपेक्षा के, हर संघर्ष में साथ चलना, हर निर्णय में विश्वास देना और परिवार को प्रेम तथा संतुलन से बाँधे रखना — यह सब शब्दों से कहीं अधिक गहरा है। जीवन की इस लंबी यात्रा में उनका साथ केवल एक संबंध नहीं, बल्कि ईश्वर के आशीर्वाद जैसा रहा।

इन सभी के प्रेम, आशीर्वाद, त्याग और अटूट साथ के बिना यह पुस्तक केवल एक अधूरा विचार बनकर रह जाती।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

आभार

मैं अपने जन्मस्थान देवरिया सहित संबलपुर, वाराणसी, गुवाहाटी, बोरझार, लुमडिंग, सिलचर, भोपाल, कानपुर, लखनऊ, आगरा, जयपुर, अहमदाबाद, मुंबई, नई दिल्ली, मेरठ, पटना, जसीडीह, कोलकाता, हैदराबाद, भुवनेश्वर और गोरखपुर तथा भारत एवं विश्व के अनेक नगरों में बसे अपने सभी प्रियजनों, मित्रों, अग्रज एवं कनिष्ठ सहपाठियों, सहकर्मियों और शुभचिंतकों के प्रति हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

आप सभी के स्नेह, विश्वास, सहयोग और शुभकामनाओं ने मेरे जीवन को समृद्ध बनाया है।

यह पुस्तक उन सभी आत्मीय संबंधों और मधुर स्मृतियों को विनम्र श्रद्धांजलि है, जिन्होंने मेरी जीवन-यात्रा को अर्थ, प्रेरणा और अपनत्व प्रदान किया।

साथ ही उन सभी प्रियजनों, मित्रों एवं आत्मीय व्यक्तियों के प्रति भी मैं हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ, जो मेरे जीवन में आए और जिन्होंने अपने निःस्वार्थ स्नेह, शुभकामनाओं, आशीर्वाद और आत्मीय ऊर्जा से मेरे जीवन को प्रेम, अपनत्व और मधुर स्मृतियों से आलोकित कर दिया। जीवन की इस यात्रा में उनका साथ मेरे लिए सदैव एक अमूल्य धरोहर रहेगा।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

विशेष आभार

हम उन सभी मित्रों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता एवं विशेष आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने पूर्ण निःस्वार्थ भाव से हस्ताक्षरित सहमति-पत्र के माध्यम से इस पुस्तक में अपने वास्तविक नामों के उपयोग की अनुमति प्रदान की। उनके इस विश्वास ने इस कृति को अधिक जीवंत, प्रामाणिक और विश्वसनीय रूप प्रदान किया।

हम उन सभी मित्रों के भी हृदय से आभारी हैं जिन्होंने समय-समय पर अपने बहुमूल्य सुझाव, संस्मरण, विचार, तथ्यों के सत्यापन तथा रचनात्मक मार्गदर्शन द्वारा इस पुस्तक को निरंतर समृद्ध, परिष्कृत और अधिक सार्थक बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया।

हम उन सभी संबंधों के प्रति भी अपनी गहन कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिनसे हमारा आत्मीय जुड़ाव वर्ष 1966 से 2026 के दौरान हमारे साथ अध्ययन कर रहे मित्रों के माध्यम से स्थापित हुआ। समय के साथ वे केवल परिचित नहीं रहे, बल्कि हमारे विस्तारित परिवार का अभिन्न हिस्सा बन गए। उनके स्नेह, अपनत्व, प्रोत्साहन और विश्वास ने इस संस्मरण-यात्रा को नई ऊर्जा, नई दिशा और नई संवेदनशीलता प्रदान की।

यह पुस्तक केवल मेरी स्मृतियों का संकलन नहीं है; यह उन सभी मित्रों, उनके परिवारों तथा उन आत्मीय संबंधों के निःस्वार्थ स्नेह, सहयोग, विश्वास और सहभागिता का सामूहिक प्रतिबिंब है, जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस कृति को संभव बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया।

मैं आप सभी के प्रति हृदय से नतमस्तक हूँ।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

प्रेरणा के प्रति कृतज्ञता

मैं अपनी कनिष्ठ सहयोगी सुश्री रागिनी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मुझे इस पुस्तक को लिखने के लिए प्रेरित किया।

उनके उत्साह, विश्वास और निरंतर प्रोत्साहन ने मुझे अपने जीवन के अनुभवों, विचारों और मूल्यों को शब्दों में संजोने का साहस दिया।

उन्होंने न केवल मुझे अपने मन की गहराइयों में छिपी भावनाओं को शब्दों का रूप देने की प्रेरणा दी, बल्कि इस संपूर्ण यात्रा में हर क्षण एक सच्चे संबल, विश्वास और अपनत्व के साथ मेरा हाथ थामे रखा। जब कभी शब्द बिखरने लगे, भावनाएँ मौन होने लगीं या मन संकोच से भर गया, तब उन्होंने अपने स्नेह, धैर्य और प्रोत्साहन से मुझे आगे बढ़ने का साहस दिया।

यदि उनका स्नेह, विश्वास और समर्पण न होता, तो शायद ये भावनाएँ केवल मन के किसी कोने तक सीमित रह जातीं और यह पुस्तक कभी आपके हृदय तक पहुँच ही नहीं पाती।

उनके प्रति मेरा हृदय सम्मान, आत्मीयता और कृतज्ञता से सदैव भरा रहेगा।

कुछ संबंध शब्दों से नहीं, बल्कि संवेदनाओं से अपनी पहचान बनाते हैं, और ऐसे संबंध जीवन भर हृदय के अत्यंत निकट बने रहते हैं।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

लेखक की ओर से

प्रत्येक व्यक्ति का जीवन एक अद्वितीय कहानी है। हम जीवन भर अनेक अनुभव प्राप्त करते हैं, सफलताएँ अर्जित करते हैं, चुनौतियों का सामना करते हैं और अनेक लोगों के जीवन को स्पर्श करते हैं। समय के साथ हमारी यादें धुंधली हो सकती हैं, परंतु यदि उन्हें शब्दों में संजो दिया जाए तो वे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाती हैं।

“स्मृतियों की अनुगूँज” केवल एक पुस्तक नहीं है, बल्कि यह आपके जीवन की कहानी, आपके विचारों, आपके संघर्षों, आपकी उपलब्धियों और आपके जीवन मूल्यों का दस्तावेज़ है। इसका उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आत्मकथा स्वयं लिखने के लिए प्रेरित करना है, ताकि उसका अनुभव और विरासत आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुँच सके।

इस पुस्तक में दिए गए अध्याय और प्रश्न पाठक को अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने और उन्हें सरल भाषा में लिखने के लिए प्रेरित करते हैं। यह केवल घटनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों का ऐसा संकलन है जो परिवार और समाज के लिए अमूल्य धरोहर सिद्ध होगा।

मेरा विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ न कुछ ऐसा अवश्य होता है जिससे संसार सीख सकता है। यदि हम अपनी कहानी स्वयं नहीं लिखेंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमारे जीवन के अनेक महत्त्वपूर्ण अनुभवों से वंचित रह जाएँगी।

आशा है कि यह पुस्तक आपके जीवन की अमूल्य स्मृतियों को सहेजने का माध्यम बनेगी।

एक बार पुनः कहना चाहूँगा कि यह केवल मेरी आत्मकथा नहीं होगी।

— संजय कुमार राय

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

धीरे-धीरे मुझे यह एहसास होने लगा...

कि मैं केवल अपना जीवन नहीं लिख रहा था। मैं... अपनी पूरी पीढ़ी की कहानी लिख रहा था। यह केवल मेरी कथा नहीं होगी।

यह उन लाखों लोगों की कहानी होगी...

जो सीमित साधनों में बड़े हुए... लेकिन जिनके सपनों की कोई सीमा नहीं थी।

जो सुविधाओं से नहीं... संघर्ष से शिक्षित हुए।

यह उन माता-पिता की कहानी होगी...

जो अपनी इच्छाओं को बच्चों के भविष्य के लिए टालते रहे। जो अपने हिस्से का दूध बच्चों के गिलास में डाल देते थे। जो अपने लिए नए कपड़े छोड़कर बच्चों की फ़ीस भरते थे। जो पुरानी चप्पल कई बार सिलवाकर पहनते रहे। जो त्योहार पर पहले बच्चों के कपड़े खरीदते थे।

जो महीने के अंत में खर्च जोड़ते थे, लेकिन उम्मीद कभी नहीं घटाते थे। जो ओवरटाइम को मजबूरी नहीं, परिवार का भविष्य मानते थे। जो सुबह सबसे पहले उठते और रात सबसे बाद में सोते थे। जो अपनी थकान घर की चौखट पर ही उतार देते थे। जो बच्चों के सामने हमेशा मुस्कराते थे। जो हर असफलता के बाद कहते थे— “अगली बार सब ठीक होगा।”

यह उन विद्यार्थियों की कहानी होगी...

जो एक ही किताब से चार मित्र पढ़ लेते थे। जो पूरी रात परीक्षा की तैयारी कर सुबह सीधे परीक्षा कक्ष पहुँचते थे। जो हॉल के कमरे में एक पंखे के नीचे

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

चार लोग सो जाते थे। जो घर से आया अचार पूरे कमरे की साझी पूँजी बन जाता था।

जो चाय के एक गिलास पर घंटों दुनिया बदलने की बात करते थे। जो एक साइकिल पर दो नहीं, कभी-कभी तीन लोग भी सफ़र कर लेते थे। जो छुट्टियों का टिकट महीनों पहले बुक करवाते थे। जो ट्रंक, बिस्तर और कुछ सपने लेकर घर से निकले थे। जो माँ की चिट्ठी कई-कई बार पढ़ते थे।

जो मनीऑर्डर आने का बेसब्री से इंतज़ार करते थे। जो जेब में दस रुपये लेकर भी खुद को अमीर समझते थे। जो स्टेशन पर विदा लेते समय आँसू छिपा लेते थे।

यह उन परिवारों की कहानी होगी...

जो ब्लैक-एंड-व्हाइट टीवी पर पूरा मोहल्ला साथ बैठकर कार्यक्रम देखता था। जो रविवार की फ़िल्म पूरे सप्ताह की सबसे बड़ी प्रतीक्षा होती थी। जो रेडियो की आवाज़ सुनते ही पूरा घर एक जगह इकट्ठा हो जाता था। जो एक टेलीफ़ोन पूरे मोहल्ले की खबर जोड़ देता था।

जो बिजली जाते ही छत पर बैठकर घंटों बात करते थे। जो गर्मियों में आँगन में चारपाई डालकर तारों के नीचे सोते थे। जो बारिश की पहली फुहार में भीगना किसी उत्सव से कम नहीं मानते थे। जो हाथ से लिखे पत्रों में पूरा जीवन समेट देते थे।

जो फ़ोटो खिंचवाने से पहले कई दिन तैयारी करते थे। जो कैमरे की एक रील के हर फ़्रेम की कीमत समझते थे। जो शादी के एल्बम को बार-बार देखकर खुश हो जाते थे।

यह उन बेटियों की कहानी होगी...

जो अपनी इच्छाओं से पहले परिवार की ज़रूरत समझती थीं।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.

यह उन बहनों की कहानी होगी...

जो राखी के साथ दुआएँ भी भेजती थीं।

यह उन भाइयों की कहानी होगी...

जो बहनों की मुस्कान के लिए अपनी ज़रूरत टाल देते थे।

यह उन मित्रों की कहानी होगी...

जो वर्ष बाद मिलकर वहीं से बात शुरू कर देते थे जहाँ छोड़ी थीं। जो बिना बुलाए कठिन समय में सबसे पहले पहुँच जाते थे। जो जेब खाली होने पर भी दोस्ती को कभी खाली नहीं होने देते थे। जो एक-दूसरे की सफलता को अपनी जीत मानते थे।

यह उन प्रेमों की कहानी होगी...

जो कभी शब्दों में नहीं आए। जो डायरी के पन्नों में हमेशा के लिए सुरक्षित रह गए। जो समय की धूल से ढँक गए, लेकिन स्मृतियों से कभी मिटे नहीं।

यह उन लोगों की कहानी होगी...

जो दुनिया के लिए साधारण थे... लेकिन अपने परिवार के लिए पूरी दुनिया थे। जो घर बनाते रहे और अपने मन की दरार छिपाते रहे। जो अपनों की मुस्कान के लिए अपने आँसू पीते रहे। जो उम्र भर देते रहे, लेकिन बदले में बहुत कम माँगा।

जो बूढ़े हो गए, लेकिन अपनों की चिंता कभी बूढ़ी नहीं हुई।

© Sanjay Kumar Rai. All Rights Reserved.